इकाई-3 बच्चों का आरंभिक भाषा विकास और विद्यालय में भाषा

* बच्चों के भाषा सीखने की क्षमता तथा बच्चों के भाषाई ज्ञान को समझना
  - विद्यालय आने से पहले बच्चों की भाषायी पूंजी

बच्चों में भाषा सीखने की क्षमता जन्मजात होता है। वो अपने माता-पिता, घर-परिवार द्वारा बोली गई बातों को सुनते हैं और उसे दोहराने का कोशिश करते हैं। जब वो थोड़ बड़े होते हैं तो आस-पड़ोस, दोस्तों के संपर्क में आते हैं। जिससे उनके भाषा कौशल का विकास होता है। आज के बच्चे टेलीविजन, मोबाइल पर विभिन्न कार्टून देखते हैं उससे भी वो भाषा अर्जित करते हैं। बच्चे सिर्फ जितना सुनते हैं उतना ही नहीं बोलते हैं। बल्कि वो भाषा का सृजन भी करते हैं। उन्हें व्याकरण का ज्ञान नहीं होता है। लेकिन उनके भाषाशैली में नियमबद्धता झलकता है। इससे यह स्पष्ट होता है कि बच्चों में भाषा अर्जित करने की असीम शक्ति होती है।

इस तरह हम यह भी कह सकते हैं कि बच्चे का भाषा का विकास विद्यालय आने से पूर्व बहुत हद तक हो चुका होता है। वह स्पष्ट तरीके से अपने बात को व्यक्त कर पाते हैं। और इसे आधार मानकर विद्यालय में शिक्षा दी जा सकती है।

Scanned by CamScanner

Scanned with CamScanner

* बच्चे भाषा कैसे सीखते हैं? (स्किनर, चॉमस्की वायगोत्सकी और पियाजे के विशेष संदर्भ में)

i) स्किनर के अनुसार - स्किनर व्यवहारवादी परिप्रेक्ष्य से जुड़े हैं। व्यवहारवादी परिप्रेक्ष्य के अनुसार सीखने की प्रक्रिया में "उद्दीपन - प्रतिक्रिया - पुनर्बलन" का विशेष महत्व है। किसी भी नई चीज को सीखने के लिए अथवा प्रतिक्रिया करने के लिए उद्दीपन की उपस्थिति अनिवार्य है और जब बच्चे को उस प्रतिक्रिया पर किसी प्रकार का पुनर्बलन प्राप्त होता है तो सीखने की प्रक्रिया पुष्ट होती है। इसका सीधा तात्पर्य यह है कि सीखने की प्रक्रिया का मूल वातावरण में कहीं निहित है। इस व्यवहारवादी परिप्रेक्ष्य के अनुसार बच्चे परिवेश में उपलब्ध भाषा का अनुकरण करते हुए भाषा सीखते हैं।

ii) चॉमस्की के अनुसार - चॉमस्की बच्चों के भाषा सीखने की जन्मजात क्षमता में विश्वास रखते हैं और यह स्वीकार करते हैं कि बच्चे इसी क्षमता के सहारे अपने परिवेश से भाषा को ग्रहण करते हैं। और विभिन्न मानसिक संरचनाओं को आत्मसात करते हुए नए-नए वाक्य बनाते हैं। इनका मानना है कि भाषा केवल अनुकरण के माध्यम से नहीं सीखी

Scanned by CamScanner

Scanned with CamScanner

जा सकती। सीमित वाक्य को सुनकर असीमित वाक्यों को बोलना 'मानिषक अर्जित क्षमता' द्वारा संभव है। अर्थात् बच्चे अपने परिवेश में जो भाषा सुनते हैं, उसका वो विश्लेषण करते हैं और फिर प्रयोग करते हैं। इस प्रकार समाज से प्राप्त मानिषक आँकड़ों पर बच्चे खुद अपने कुछ नियम बना लेते हैं। जिसे चॉमस्की 'लघु व्याकरण' कहते हैं।

आगम (Input)	→	भाषा अर्जन क्षमता	→	निर्गम output

जैसे- बड़ों के 'आप' और छोटों के लिए 'तुम' का प्रयोग करना।
- लड़कों के लिए 'खाता है' लड़कियों के लिए 'खाती है' का प्रयोग करना।

iii) वायगोत्स्की के अनुसार- वाइगोत्स्की का मानना है कि बच्चे अपने- अपने समुदाय के संपर्क में भाषा सीखते हैं। इसका अर्थ यह है कि भाषा की ध्वनियों की सार्थकता तभी है जब वह किसी वस्तु विशेष की ओर संकेत करता है। जैसे- किसी समुदाय में 'जाल' का अर्थ 'मकड़ी का जाल' तो कहीं 'मछली पकड़ने का जाल' है। इस तरह अलग- अलग समुदायों में एक शब्द या ही शब्द को अलग - अलग बातों के लिए प्रयोग किया जाता है।
अर्थात् इनके अनुसार 'बच्चे की भाषा समाज के साथ संपर्क का परिणाम है'।

Scanned by CamScanner

Scanned with CamScanner

iii) पियाजे के अनुसार – जीन पियाजे एक जीव वैज्ञानिक की तरह भाषा सीखने को व्याख्यायित करते हैं। उनका मानना है कि मानसिक विकास में जन्मजात कारकों की भूमिका नहीं होती है। विकास का कारण है – जीव और वातावरण के बीच अंत: क्रिया। इस अर्थ यह है कि जिस प्रकार बच्चा वातावरण के संपर्क में आता है और उसका विकास क्रमशः होता है। उसी प्रकार उसकी भाषा का भी होता है। ~~पियाजे~~ पियाजे के अनुसार सीखने के संदर्भ में आत्मसीतीकरण (Assimilation) और समायोजन (Accommadation) की प्रक्रिया महत्वपूर्ण होता है।

जैसे – (बच्चों को गाय दिखा कर कहा जाता है कि यह गाय है तो बच्चों सोच लेता है कि चार पैरों वाले जानवर को गाय कहते हैं। (Assimilation) और बिल्ली को भी गाय कहते हैं बाद में जब वो इसरे बच्चों को गाय को गाय और बिल्ली को बिल्ली बोलते हैं तो वो दोनों में अंतर समझने का कोशिश करते हैं। उनके आकार, रंग, आवाज में अंतर पर ध्यान देते हैं। इसे (Accommadation) समायोजन कहते हैं।

स्किनर – अनुकरण द्वारा
चॉमस्की – जन्मजात क्षमता
वाइगोत्स्की – समुदाय के संपर्क से
पियाजे – जीव व वातावरण के बीच अंत: क्रिया

Scanned by CamScanner

Scanned with CamScanner

* भाषा अर्जित करने और भाषा सीखने में अंतर

भाषा अर्जित करना - हम जिस परिवेश में रहते है वहा कि भाषा हम खुद-ब-खुद सीख जाते है। हम यह भाषा व्याकरण के माध्यम से नही सीखते है। जैसे - अगर हम हिन्दी भाषी परिवेश में रहते है तो स्वत: हम यह भाषा सीख जाते है।

भाषा सीखना - हम हिन्दी भाषी क्षेत्र में रहते है तो स्वत: हिन्दी सीख जाते है। इसे भाषा अर्जित करना कहते है। किंतु जब हम इंग्लिश सीखते है तो इसे भाषा सीखना कहते है। इसे व्याकरण की मदद से सीखा जाता है।

* विद्यालय में भाषा:- विषय के रूप में
- माध्यम भाषा के रूप में

विद्यालय में भाषा दो रूपों में प्रयोग किया जाता है। पहला विषय के रूप में। समान्यत: विद्यालय में हिन्दी और इंग्लिश दो भाषा विषयों की पढ़ाई होती है। साथ ही संस्कृत और उर्दु की भी शिक्षा दी जाती है।

भाषा सिर्फ भाषा विषय तक ही सीमित नही होता है। बल्कि यह एक माध्यम होता है दूसरे विषय को भी पढ़ाने का। अपने विचारों को व्यक्त करने का भी माध्यम होता है। जैसे बिहार बोर्ड में हिन्दी भाषा का

Scanned by CamScanner

Scanned with CamScanner

प्रयोग किया जाता है। और CBSE बोर्ड में इंग्लिश a भाषा का प्रयोग किया जाता है।

* भाषा सीखने-सिखाने के उद्देश्यों की समझ: कल्पनाशीलता, सृजनशीलता, संवेदनशीलता

कल्पनाशीलता - भाषा के द्वारा बच्चे किसी विषय-वस्तु पर सोच सकते है। उसके बारे में विचार कर सकते है। उसकी कल्पना कर सकते है। इससे उनके कल्पनाशीलता का विकास होता है।

सृजनशीलता - भाषा के द्वारा बच्चों की सृजन करने की क्षमता का भी विकास होता है। वो कुछ सीमित शब्द सुनकर उसका विश्लेषण कर असीमित शब्द बोलते है।

संवेदनशीलता - बच्चे भाषा का प्रयोग ~~स्थिती~~ के स्थिति के अनुसार करना भी सीख जाते है। खुशी के माहौल में खुशनुमा बात करना, दुःख के माहौल में शांत रहना। शब्दों का चयन करना और उनका प्रयोग करना।

Scanned by CamScanner

Scanned with CamScanner

* भाषा के आधार-भूत कौशलों - सुनना, बोलना, पढ़ना तथा लिखने का विकास - शुरुआती पढ़ना - लिखना

भाषा के आधारभूत कौशलों को सुबोपली नाम से जाना जाता है। अर्थात् सुनना, बोलना, पढ़ना और लिखना। किसी भी भाषा को जो बच्चे परिवेश में सीखते हैं। उसे सबसे पहले सुनते हैं। वो सुनते हैं तभी बोलने का कोशिश करते हैं। इसतरह से वो बोलना सीख जाते हैं। अगर वो सुनेंगे नहीं तो वो बोलना कभी नहीं सीख पाएँगे। इसके बाद उन्हें चित्र के माध्यम से पढ़ना सिखाया जाता है। शुरुआत में बच्चे अनुमान लगाकर पढ़ते हैं। उसके बाद उन्हें लिखना सिखाया जाता है। बच्चे शुरुआत में कॉपी-किताब उलटते-पलटते हैं। फिर अनुमान लगाकर चित्र के माध्यम से पढ़ने का कोशिश करते हैं। उसके बाद वो कलम द्वारा कॉपी पर घसते हैं जिनसे उनका कलम या पेंसिल पर पकड़ बन जाता है। धीरे-धीरे वो विभिन्न प्रकार की आकृति बनाना सीखते हैं जैसे (लाईन, गोल) इत्यादि। उसके बाद उन्हें अक्षर लिखना सीखाया जाता है। उन्हें एक-एक करके अक्षर सीखाया जाता है। इस तरह धीरे-धीरे उनका उम्र के हिसाब से विकास होता रहता है।

Scanned by CamScanner

Scanned with CamScanner

* लिपि और भाषा

→ भावों और विचारों को व्यक्त करने के सशक्त माध्यम को भाषा कहते हैं।

→ किसी भाषा को लिखने के लिए जिन चिन्हों का जरूरत होता है, उसे लिपि कहते हैं।

→ सभी भाषाओं की अलग-अलग लिपि होती है- जैसे- हिन्दी - देवनागरी
अंग्रेजी - रोमन
उर्दू - फारसी

Scanned by CamScanner

Scanned with CamScanner